



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

आधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 25]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 20, 1994/भाद्र 29, 1916

No. 25]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 20, 1994/BHADRA 29, 1916

दि इन्स्टीट्यूट आफ कम्पनी मैकेटरीज आफ इंडिया

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 सितम्बर 1994

संख्या 710/1 (एम)/17. —जबकि कम्पनी सचिव अधिनियम, 1980 (1980 का 56) की धारा 39 कि उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इन्स्टीट्यूट आफ कम्पनी मैकेटरीज आफ इंडिया ने केन्द्रीय सरकार के पूर्व अनुमोदन से कम्पनी सचिव विनियमावली, 1982 में संशोधन करने के लिए नीचे उल्लिखित कतिपय विनियम बनाए हैं :

अब जब उक्त धारा की उपधारा (3) के अन्तर्गत में, इन्स्टीट्यूट उक्त विनियमों के प्राप्ति को ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रमाणित करती है जिनकी इनके द्वारा प्रभावित होने की सम्भावना है।

2. एतद्वारा सूचना दी जाती है कि कोई भी व्यक्ति जो उक्त विनियमों के प्राप्ति के सम्बन्ध में किसी आपत्ति या मुद्दा की भेजने का इच्छुक है, वह भारत के राजपत्र की प्रतियां जिसमें उक्त विनियमों का प्राप्ति समाविष्ट है,

सार्वजनिक रूप से प्राप्त होने की तारीख से 45 दिन के अन्दर उन्हें सचिव, इन्स्टीट्यूट आफ कम्पनी मैकेटरीज आफ इंडिया, आई सी एम आई हाउस, 22, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 को भेजें।

विनियमों का प्राप्ति

1.(1) इन विनियमों को कम्पनी सचिव (संशोधन) विनियमावली, 1994 कहा जाएगा।

(2) यह विनियम भारत के राजपत्र में अंतिम रूप से प्रकाशित होने की तारीख से लागू होंगे।

2. कम्पनी सचिव विनियमावली, 1982 में:—

(क) अध्याय VII में विनियम 55क के बाद निम्नलिखित निवृत्त किया जाएगा, अर्थात्:—

“अध्याय VII क

अर्हक पञ्च पाठ्यक्रम और परीक्षाएं

55क. अर्हक पञ्च पाठ्यक्रम और परीक्षाएं:—
परिपक्व व्यावहारिक और/या सैद्धान्तिक प्रशिक्षण दे सकती है या उसकी व्यवस्था कर सकती है और ऐसे विषयों में परीक्षा

ले सकती है जो यह सदस्यों के लिए उपयोगी समझती हो और इस अध्याय के उपबन्धों के अनुसार इस सम्बन्ध में प्रमाण पत्र या डिप्लोमा प्रदान कर सकती है।

पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाओं में सदस्यता पत्रवात् अर्हता पाठ्यक्रम

55ग. पूँजी बाजार और वित्तीय सेवा पाठ्यक्रम की पद्धति:— (1) पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में पाँच प्रश्न पत्र तथा एक शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट होगी।

(2) उक्त पाठ्यक्रम का पाठ्य-विवरण वही होगा जिसका उल्लेख अनुसूची "घ" में होगा।

55घ. प्रशासन—विनियम 100 में जो कुछ भी निहित है उसके हवाले हुए भी पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाओं संबंधी पाठ्यक्रम परिषद् द्वारा अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2) (इस अध्याय में "समिति" के रूप में निर्दिष्ट) के अन्तर्गत प्रयोजन के लिए गठित समिति के अधीन होगी जिसका कार्य परीक्षा आयोजित करना, उसमें प्रवेश देना, परीक्षकों की नियुक्ति और वयन, अभ्यर्थियों के मार्गदर्शन के लिए पुस्तकों का निर्धारण, परीक्षाफल की घोषणा और अन्य संबंधित विषय होंगे।

55ङ. सलाहकार बोर्ड:—समिति एक सलाहकार बोर्ड नियुक्त कर सकती है जिसमें सात से अधिक व्यक्ति नहीं होंगे जो समिति को पाठ्यविवरण, परीक्षाओं, शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट से संबंधित मामलों और पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं से संबंधित पाठ्यक्रम में जुड़े किसी अन्य मामले, समिति जैसा भी इसे निर्दिष्ट करे, सलाह देगा।

55च. पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में प्रवेश:— (1) किसी भी अभ्यर्थी को पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में तब तक प्रवेश नहीं दिया जाएगा जब तक वह,

(क) उक्त पाठ्यक्रम में पंजीकरण के लिए उसके आवेदन की तारीख से लगातार दो वर्ष या अधिक अवधि के लिए सदस्य न रहा हो; और

(ख) निम्नलिखित प्रकार से किसी में परिषद् के समर्थान के लिए व्यावहारिक अनुभव रखता हो, अर्थात्:—

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के किसी उपक्रम, स्वायत्तशासी निकाय, सांविधिक निकाय, वित्तीय संस्थान या बैंक सहित किसी कम्पनी या निगम निकाय के गणितीय, प्रशासन, वित्त, लेखा, कार्मिक या विधि विभागों में परिषद् की राय में जिनमें पर्याप्त व्यावसायिक, अनुभव प्राप्त करने की अधिक गुंजाइश है, सचिव या कार्यकारी के रूप में पाँच वर्ष का अनुभव;

(ii) किसी विश्वविद्यालय या किसी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय में प्रवक्ता के रूप में पाँच वर्ष का अनुभव जिसमें एकाउन्टेसी, वित्त विधि या प्रबंध विधा में कम से कम एक विषय पढ़ाया हो;

(iii) केन्द्रीय या राज्य सरकार में राजपत्रित अधिकारी के रूप में या किसी स्वायत्तशासी या सांविधिक निकाय में, उन विभागों में जो साधारणतया निगमित क्षेत्र की कार्य-प्रणाली से संबंधित मामलों में सम्बन्ध रखते हैं, पर्यवेक्षक पद या उसके समतुल्य पद पर पाँच वर्ष का अनुभव रखते हों;

(iv) कम्पनी सचिव के रूप में पूर्णकालिक आधार पर निरन्तर व्यवसाय का पाँच वर्ष का अनुभव;

(v) पाँच वर्ष का किसी अन्य समतुल्य पद पर सदृश्य अनुभव जो परिषद् की राय में उपरोक्त खंड (i) के उल्लिखित अनुभव का किसी उससे संबंधित समुच्चय के समतुल्य हो।

(2) किसी भी अभ्यर्थी के लिए जो पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में लिए आवेदन करना है उसे उपयुक्त फार्म में पंजीकरण शुल्क वार्षिक शुल्क सहित यदि लागू हो, तथा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के सम्बन्ध में परिषद् द्वारा समय-समय पर निर्धारित अन्य शुल्क देना अपेक्षित होगा।

55छ. पूँजी बाजार तथा वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए समय सीमा:— (1) प्रत्येक अभ्यर्थी जो पूँजी बाजार या वित्तीय सेवाओं विषयक पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए आवेदन करता है, उसे इस अध्याय के अन्तर्गत विनियमों के अनुसार उस महीने में पाँच वर्ष की अवधि के लिए पंजीकृत कराया जाएगा जब उसका सभी तरह से पूर्ण आवेदन इंटीट्यूट द्वारा पंजीकरण के लिए स्वीकार किया जाता है।

(2) परीक्षा पूरी करने के लिए समय सीमा:— कोई भी अभ्यर्थी जिसे उपविनियम (i) के अन्तर्गत पंजीकृत किया जाता है, उसे, यथास्थिति, पंजीकरण की अवधि के अन्दर परीक्षा पूरी करनी होगी और शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

(3) पंजीकरण की समाप्ति:—किसी अभ्यर्थी का पंजीकरण पाँच वर्ष की समाप्ति पर या उस वर्ष के अन्त में जिसमें अभ्यर्थी ने उपरोक्त पूँजी बाजार और वित्तीय सेवाओं संबंधी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया है। इनमें जो भी पहले हो, समाप्त हो जाएगा।

बशर्ते कि समिति ऐसे मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अधीन जैसा कि परिषद् इस निमित्त निर्धारित करे, किसी अभ्यर्थी के पंजीकरण की अवधि इस अध्याय के अंतर्गत पाँच वर्ष से अधिक के लिए बढ़ा सकती है।

55ज. पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाएं विषयक परीक्षा में प्रवेश—किसी भी सदस्य को पूँजी बाजार एवं वित्तीय सेवाएं विषयक परीक्षा में तब तक प्रवेश नहीं दिया जाएगा जब तक कि:—

(क) उसने परीक्षा आरंभ होने वाले महीने से कम से कम 6 महीने पहले विनियम 55छ के अन्तर्गत अपना नाम

दर्ज न करा लिया हो, उदाहरण के लिए, यदि परीक्षा दिसम्बर, में आरम्भ होती है तो जिस अभ्यर्थी का नाम उस कैलेंडर वर्ष के मई महीने तक, जिसमें मई का महीना भी शामिल है, वह इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा।

(ख) उसने परीक्षा में प्रवेश के लिए उपयुक्त फार्म में जिसकी प्रतियां अभ्यर्थी को स्वयं तैयार करनी होंगी, अपेक्षित विवरणों और परिपद् द्वारा समय-समय पर निर्धारित शुल्क सहित समिति द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार इन्स्टीट्यूट को आवेदन न किया हो।

55अ. परीक्षा की अपेक्षाएँ :— (1) इस अध्याय के अन्तर्गत पंजीकृत अभ्यर्थी को परीक्षाओं और शोध प्रबन्धक या परियोजना रिपोर्ट में संबंधित ऐसी शर्तों की अनुपालना की अपेक्षा होगी जो परिपद् द्वारा समय-समय पर निर्धारित की जाती है।

(2) परीक्षा में प्रवेश, निष्कासन और परीक्षाफल को रोकना :—

(क) ऐसे कारणों में जो लिखित रूप में अभिलिखित किए जाएंगे, के लिए इसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत समिति या कोई व्यक्ति, —

(i) विनियम 55अ के अन्तर्गत पंजीकृत अभ्यर्थी को किसी परीक्षा में प्रवेश के लिए इन्कार कर सकता है; या

(ii) ऐसी शर्तों के अधीन उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है जिसे यह या वह किसी मामले की परिस्थितियों में द्युक्तसंगत समझे; या

(iii) सामान्य प्रक्रिया में प्रवेश हो जाने के बाद भी परीक्षा भवन में उसे निष्कासित कर सकता है।

(ख) इस तथ्य के बावजूद कि किसी अभ्यर्थी ने किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम ग्रेड प्राप्त कर लिया है, समिति ऐसे कारणों में जो लिखित रूप में अभिलिखित किए जाएंगे, परीक्षाफल को रोक सकती है।

(ग) समिति द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा पारित किसी भी आदेश की समीक्षा इसके द्वारा की जाएगी और समिति द्वारा पारित किसी आदेश की समीक्षा परिपद् द्वारा की जायेगी।

55अ. परीक्षा या शोध प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट, परीक्षाफल या पंजीकरण का निलम्बन या निरसन :— इस अध्याय के अन्तर्गत पंजीकृत किसी अभ्यर्थी द्वारा कदाचार की स्थिति में, परिपद् या समिति शिकायत के प्राप्त होने पर स्वेच्छा से, यदि परिपद् को यह समाधान हो जाता है कि ऐसी जांच जो यह ठीक समझे के पश्चात् कदाचार साबित हो जाएगा और ऐसी अभ्यर्थी को अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए एक अवसर देने के बाद अभ्यर्थी को किसी एक या अधिक परीक्षाओं में शामिल होने या शोध प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट को प्रस्तुत करने से निवृत्त या बर्चित कर सकती है,

या उसकी परीक्षा या शोध प्रबन्ध परियोजना रिपोर्ट को रोक या निरस्त कर सकती है या यथास्थिति इस अध्याय के अन्तर्गत उसके पंजीकरण को निरस्त और भविष्य में पंजीकरण के लिए उसे बर्चित कर सकती है।

स्पष्टीकरण :— इस विनियम के प्रयोजनों के लिए कदाचार के अन्तर्गत इन्स्टीट्यूट या परीक्षा परिसर के अन्दर, या नजदीक उपद्रवी व्यवहार, इन्स्टीट्यूट द्वारा निर्धारित किसी विनियम, शर्त, दिशा-निर्देशों या निर्देशों को भंग करना इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित किसी भी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग या प्रयोग करने की कोशिश करना, शोध प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट को तैयार करने में जैसे नकल करना विद्यमान साहित्य या स्रोतों से किसी सामग्री का उसकी यथोचित अभिसीकृति किये बिना प्रतिकृति करना और समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित बातें सम्मिलित होंगी।

55अ. परीक्षा का आयोजन :— (1) परीक्षा ऐसे अन्तरालों पर ऐसे ढंग में और ऐसे समय व स्थानों पर जैसा कि परिपद् परीक्षा के लिए दर्ज अभ्यर्थियों की न्यूनतम ऐसी संख्या को उपलब्धता पर जैसा कि परिपद् समय-समय पर निर्धारित करे के अधीन आयोजित की जा सकती है।

(2) परीक्षा की तारीख एवं स्थान तथा अन्य विवरण पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे।

55अ. परीक्षा शुल्क की वापसी या विनियोजन :— (1) किसी अभ्यर्थी को एक बार जब किसी परीक्षा के लिए प्रवेश प्रमाणपत्र जारी कर दिया जाता है वह किसी भी परिस्थितियों में उसके द्वारा भुगतान किए गए शुल्क की वापसी का पात्र नहीं होगा।

(2) जहां, तथापि, कोई अभ्यर्थी परीक्षा की अंतिम तारीख के पन्द्रह दिनों के अन्दर इन्स्टीट्यूट को परीक्षा शुल्क का अगली परीक्षा के लिए विनियोजन हेतु इस आधार पर विचार करने के लिए आवेदन करना है कि वह परिस्थितिवश परीक्षा में शामिल नहीं हो सकता था और इन्स्टीट्यूट को संतुष्ट हेतु अपेक्षित लिखित प्रमाण प्रस्तुत करता है, तो इन्स्टीट्यूट अगली होने वाली परीक्षा में उन्हीं प्रश्न पत्रों के लिए जिनमें उसका नाम दर्ज है, के लिए देय फीस हेतु, उसके द्वारा भुगतान किए गए शुल्क के पचास प्रतिशत के विनियोजन की अनुमति दे सकता है।

55अ. परीक्षा केन्द्र में परिवर्तन :— परीक्षा केन्द्रों के परिवर्तन पर सामान्यता विचार नहीं किया जाएगा और यदि विचार किया जायेगा तो परिपद् द्वारा इस प्रयोजन हेतु समय-समय पर निर्धारित शुल्क लिया जाएगा परन्तु शर्त यह है कि परीक्षा आरम्भ होने की तारीख से पूर्व पन्द्रह दिन के अन्दर प्राप्त आवेदन पर परिपद् द्वारा विचार नहीं किया जायेगा।

55अ. शोध प्रबन्ध/परियोजना रिपोर्ट :— (1) लिखित परीक्षा में अर्हता के बाद कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अर्हता की तारीख से छः महीने के बाद और दो वर्ष से पहले, पंजीकरण

की अवधि के अन्दर समिति द्वारा अनुमोदित विषय पर शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। परन्तु शर्त यह है कि समिति उन मामलों में शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने का समय बढ़ा सकती है जहाँ अभ्यर्थी :—

(i) परीक्षा में अर्हता की तारीख से दो वर्ष के अन्दर शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर पाता है; या

(ii) विनियम 55ख के उपविनियम (3) के परन्तुक के अन्तर्गत अपने पंजीकरण को नवीकरण करने के बाद पंजीकरण अवधि के दौरान अपना शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर पाता है।

2. अभ्यर्थी शोध-प्रबन्ध या अनुसंधान रिपोर्ट के साथ इंस्टीट्यूट के गाइडों के पैनल में से एक या अधिक गाइडों के नाम प्रस्तुत करेगा। सार में प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध, अनुसंधान रिपोर्ट के व्यंग्य शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त उसमें परिलक्षित समस्याओं, उनकी पूर्ण वांछा और वित्तीय सेवाओं से प्रासंगिकता, आंकड़े और प्रयोग किये जाने वाली कार्य प्रणाली तथा इस प्रकार परिलक्षित समस्याओं के संबंध में सुझाव और सिफारिशें भी शामिल होंगी। परन्तु यह कि कोई अभ्यर्थी समिति के पूर्व अनुमोदन से ऐसे गाइड को चुन सकता है जो कि इंस्टीट्यूट से गाइडों के पैनल में से नहीं है।

3. शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट परिपद द्वारा समय-समय पर निर्धारित शुल्क के साथ, जो कि वापस नहीं होगा, प्रस्तुत किया जायेगा।

4. अभ्यर्थी शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट की अंग्रेजी में पांच स्वच्छ टाइप या मुद्रित की गई प्रतियां प्रस्तुत करेगा जिसमें उसके अनुसंधान के परिणाम सनिविष्ट होंगे।

परन्तु यह कि परिपद के लिये यह यथेष्ट होगा कि वह ऐसी शर्तों के अधीन जो यह ठीक समझे और अभ्यर्थियों को पर्याप्त पूर्व सूचना देने के बाद शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट लिखने के लिये हिन्दी माध्यम का प्रयोग करने की अनुमति दें।

5. अभ्यर्थी इसके अतिरिक्त एक वक्तव्य भी प्रस्तुत करेगा जिसमें यह निर्दिष्ट होगा कि किन बातों में उसने सूचना प्राप्त की है और किस सीमा तक उसका कार्य दूसरों के कार्य पर आधारित है और यह भी सूचित करेगा कि उसके कार्य का कौन सा भाग है जिसका वह मौलिक होने का दावा करता है।

6. समिति शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट का इसके द्वारा नियुक्त निर्णायकों को उनकी इस सलाह के लिये भेजेगी, क्या शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट काफी उच्च श्रेणी की गुणवत्ता की है जो कि अनुमोदन योग्य है या क्या इसमें संशोधन किया जा सकता है, यदि हां, तो इसकी विधि क्या होगी या क्या इसे अस्वीकार किया जा सकता है।

परन्तु यह कि समिति द्वारा निर्धारित शुल्क सहित जो वापस नहीं होगा, अभ्यर्थी को आवेदन प्राप्त होने पर समिति स्वविवेक के आधार पर पंजीकरण को समिति तवीकृत कर सकती है। आवेदन पर विचार न किये जाने पर शुल्क वापस किया जायेगा और पंजीकरण के ऐसे नवीनीकरण पर अभ्यर्थी को उसके द्वारा पहले ही उत्तीर्ण प्रश्न पत्रों में बिना किसी छूट शुल्क के भुगतान किये छूट का दावा करने का हक्कदार होगा।

7. यदि कोई अभ्यर्थी शोध प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट को उपविनियम (1) में विनिर्दिष्ट अवधि के अन्दर या समिति द्वारा उपविनियम (1) के परन्तुक के अन्तर्गत बढ़ाए गये ऐसी अवधि में प्रस्तुत करने में सफल नहीं होता है तो उस संस्था के अन्तर्गत उसका पंजीकरण रद्द हो जायेगा।

55ण. माक्षाकार :—अभ्यर्थी को समिति द्वारा इस निम्न नियुक्त माक्षाकार बोर्ड के सत्र शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट पर माक्षाकार के लिये उपस्थित होना अपेक्षित होगा।

55न. पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने के लिये शंकाएं :—अभ्यर्थियों के परीक्षा में शोध-प्रबन्ध या परियोजना रिपोर्ट के मूल्यांकन के लिये 7—सूची श्रेणीकरण मानक की पद्धति होगी। (उ. उत्कृष्ट) क. ख, ग, घ, ङ, च, (निकृष्ट)। किसी प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होने के लिये अपेक्षित न्यूनतम श्रेणी प्रत्येक प्रश्नपत्र में श्रेणी अंक "ग" होगा और सभी प्रश्न पत्रों औसत ग्रेड अंक "ख" होगा। औसत श्रेणी अंक की संगणना निम्नलिखित आधार पर होगी :

उ = 6, क = 5, ख = 4, ग = 3, घ = 2, ङ = 1, च = ओ (शून्य)।

परन्तु यह कि जहां औसत श्रेणी अंक दशमनव अंक में आता है वहां .5 या उससे अधिक के अंश को 1 माना जायेगा।

(2) व्यक्तिगत सूचना :—प्रत्येक अभ्यर्थी को उनके द्वारा पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रश्नपत्र और तत्संबंधी परीक्षाफल में प्राप्त श्रेणियों के बारे में व्यक्तिगत तौर पर सूचित किया जायेगा किन्तु किसी भी परिस्थिति में प्रश्न विलोप या किसी प्रश्न पत्र के खंड में प्राप्त अंक प्रस्तुत नहीं किये जायेंगे।

(3) श्रेणियों का सत्यापन :—किसी परीक्षा में किसी प्रश्नपत्र विशेष में या प्रश्नपत्रों में अभ्यर्थी के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को उचित रूप से जांचा गया है और अंकित किया गया है या नहीं इसके बारे में सूचना उक्त परीक्षा के परीक्षाफल की घोषणा के तीस दिनों के अन्दर अभ्यर्थी द्वारा परिपद द्वारा समय-समय पर निर्धारित सत्यापन शुल्क के साथ आवेदन प्रस्तुत करने पर अभ्यर्थी को दी जायेगी।

स्पष्टीकरण :—इस उपविनियम में उल्लिखित शुल्क उत्तरों के पत्रमूल्यांकन के लिये न होकर केवल इस बात का स्थापन करने के लिये है कि क्या किसी प्रश्न पत्र विशेष या प्रश्न पत्रों में अभ्यर्थी के उत्तरों की जांच और मूल्यांकन कर लिया गया है।

55थ. परीक्षक :—समिति प्रश्न पत्र तैयार करने और उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिये ऐसी व्यवस्था कर सकती है तथा ऐसे परीक्षकों की नियुक्ति कर सकती है जैसा वह ठीक समझे।

55व. परीक्षाफल में संशोधन :—किसी मामले में यदि यह पाया जाता है कि किसी परीक्षा का परीक्षाफल किसी गलती, अनाचार, कपट, अनुचित आचरण या किसी भी प्रकृति के अन्य मामले के कारण प्रभावित हुआ है, तो समिति को ऐसे परीक्षाफल को इस रीति से संशोधित करने का अधिकार होगा जो कि वास्तविक स्थिति के अनुसार ही हो और ऐसी घोषणा कर सकती है जैसा समिति उस निमित्त ठीक समझे।

55व. डिप्लोमा प्रमाणपत्र प्रदान करना :—इस अध्याय के अन्तर्गत किसी अभ्यर्थी द्वारा पूंजी बाजार तथा वित्तीय सेवाएं विषयक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने पर, इंस्टीट्यूट द्वारा समुचित फार्म में इस आशय का डिप्लोमा प्रमाणपत्र प्रदान किया जायेगा और वह “पी एम डी सी एस (सी एम एफ एस)” वर्णनात्मक शब्द एवं कोष्ठक का प्रयोग करने का पात्र होगा जो इस बात का सूचक होगा कि उसे पूंजी बाजार और वित्तीय सेवाओं में सदस्यता पश्चात् डिप्लोमा प्रदान किया गया है।

अनुसूची—“घ”

[विनियम 55ग(2)]

पूंजी बाजार तथा वित्तीय सेवा परीक्षा में सदस्यता पश्चात् डिप्लोमा के लिये पाठ्य-विवरण

प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा तथा परीक्षा की अवधि तीन घंटे की होगी। परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगी, परन्तु परिषद के लिये यह यथेष्ट होगा कि होगा कि वह ऐसी शर्तों के अधीन जैसा कि वह ठीक समझे तथा अभ्यर्थियों को पर्याप्त पूर्व सूचना देने के पश्चात्, किसी प्रश्न-पत्र विशेष के उत्तर देने में हिन्दी माध्यम का प्रयोग करने के लिये अनुमति दे सकता है।

प्रश्न-पत्र-1

वित्तीय प्रबन्ध—संकल्पना, मुद्दे तथा व्यवहार

उद्देश्य तथा कार्य क्षेत्र :—निगम वित्तीय प्रबन्ध के विविध आयामों से सदस्यों को परिचित कराना,

विस्तृत विषय सूची: वित्तीय प्रबन्ध पर विहंगम दृष्टि :— वित्तीय प्रबन्ध का परिवेश—गतिशील तथा क्रियाकारी, वित्तीय प्रबन्ध के कार्य, वित्तीय प्रबन्ध के लक्षण, वित्तीय प्रबन्धकों के उत्तरदायित्व :

2. वित्तीय पूर्वानुमान तथा योजना :—विधि श्रोतों का पूर्वानुमान; रोकड़ पूर्वानुमान; परियोजित लाभ तथा हानि के लेखा तथा तुलन पत्र।

3. पूंजी की संरचना तथा निधियों को इकट्ठा करना :— परियोजना के लिये निधि जुटाना, आधुनिकीकरण तथा विस्तार, नवीनीकरण तथा पुनर्वास, अतिरिक्त पूंजी व्यय, कामकाज पूंजी के लिये निधियां, पूंजी की संरचना तथा लागत; प्रोस्पेक्टस का प्रारूपण; प्रतिभूतियों के निर्गमन से सम्बन्धित विनियमनों को अनुपालना; मूल्य औचित्य, शेयर पूंजी का निर्गमन—इक्विटी, अधिमानी राइट्स तथा बोनस डिबेंचरों का निर्गमन; भारतीय प्रतिभूति तथा एक्सचेंज बोर्ड मार्गदर्शी सिद्धांत; विदेशी मध्यवर्ती, अन्डर राइटिंग, रेडिंग, प्रवर्तकों का योगदान, न्यास का सृजन डिबेंचर मोचन निधि आदि का सृजन।

4. कामकाज पूंजी प्रबंध :—वाणिज्यिक बैंकों से कामकाज पूंजी वित्त विभिन्न समितियों को सफाई भारतीय रिजर्व बैंक के सामान्य मार्गदर्शी-सिद्धान्त अप्रणीय बैंक तथा सहायता संघ में बैंक, क्रेडिट अप्राइजल; स्वीकार्य बैंक वित्त; गिरवी; करार, आहरण शक्ति; अवधि रिपोर्टिंग रिपोर्टों की प्रकृति—बैंकों द्वारा निरीक्षण।

5. अन्तर्राष्ट्रीय वित्त प्रबन्ध विहंगम दृष्टि :—अन्तर्राष्ट्रीय कर प्रबन्ध—राजनीतिक जोखिम का मापन कार्य तथा प्रबन्ध—विदेशी निवेश निर्णय, विदेशी निवेश तथा वित्तीय संरचना के लिये पूंजी की लागत, विदेशी विनियम विनियम अधिनियम, 1973 तथा उसके अन्तर्गत बनाये गये नियमों की अनुपालना।

6. विलय, सम्मेलन, अधिग्रहण तथा अर्जन के वित्तीय प्रबन्ध :—भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के उद्देश्य।

7. आन्तरिक एवं बाह्य वित्त पोषण :—क्रेडिट नीतियां तथा वसूली पद्धति—लाभांश का निर्णय करना—लाभांश नीति को प्रभावित करने वाले कारण तथा नीतियां, कर तथा ह्रास पर विचार—बोनस शेयर तथा स्टॉक विभाजित करना।

8. परियोजनाओं का कार्यान्वयन तथा मोनटरिंग करना :— वित्तीय संस्थानों द्वारा परियोजना की अनुमति, नई औद्योगिक नीति के अन्तर्गत शर्तें तथा लाइसेंस, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों के मानक, पर्यावरण अनुमति सहित अन्य सांविधिक अनुमति, वित्तीय संस्थानों द्वारा अनुमोदन देने से पूर्व तथा अनुमोदन देने के पश्चात् उठाये जाने वाले कदम—ऋण करार पर हस्ताक्षर, कार्यान्वयन के दौरान रिपोर्टों को अनुपालना, परियोजना आकलन तथा पूरक ऋण, यदि कोई हो, का पुनरीक्षण, 100% निर्यात ओरियन्टेड यूनिटों के लिये छूट सहित उपलब्ध कर छूट।

रुग्ण उद्योगों का पुनरुद्धार

रुग्ण औद्योगिक कम्पनी विशेष उपबन्ध अधिनियम, 1985 के अन्तर्गत प्रतिवार्यता रुग्ण कम्पनियों की परिभाषा—
 औद्योगिक तथा वित्तीय पुनःनिर्माण बोर्ड की भूमिका—
 ऑपरेटिव एजेंसियों की भूमिका—ऑपरेटिव एजेंसियों द्वारा की गई सकारिणों की प्रकृति; इच्छुक पक्षों द्वारा अभ्यावेदन—पुनरुद्धार के लिये छूट औद्योगिक रुग्णता का प्रबन्ध, रुग्णता के संकेत, रुग्ण उद्योगों में अग्रवासी भारतीय (एन आर आई) निवेश के लिये विशेष उपबन्ध, रुग्ण उद्योगों आदि के सममिलन के लिये आयकर का लाभ।

प्रश्न पत्र-II

वित्तीय सेवा तथा वित्तीय बाजार

उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्र : मुद्रों तथा व्यवहारों की संकल्पना से सहभागियों को अवगत करना जो कि लक्ष्य बाजार में वित्तीय सेवाओं के उपबन्धों तथा प्रभावी स्वरेखा प्राप्त करने हैं।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग "क"—वित्तीय सेवायें

वित्तीय सेवाओं की प्रकृति तथा कार्यक्षेत्र : वित्तीय सेवायें प्रदान करने वाले संस्थान; वित्तीय सेवा के प्रकार, भविष्य में आने वाली चुनौतियां।

नई वित्तीय सेवायें, उद्यम पूंजी, मूल, मुख्य लक्ष्य उद्यम पूंजी निधियों का प्रबन्ध संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, यूरोपीय राष्ट्रों में उद्यम पूंजी का अनुभव, जोखिम का दायरा, उद्यम पूंजी का मिडिकेशन, कर तथा कानूनी पहलू।

क्रेडिट रेटिंग सेवायें

वित्त व्यवस्था में निहित उपभोक्ता वित्त, क्रेडिट कार्ड, कार्यनीति; स्थावर सम्पदा, वित्त-व्यवस्था पट्टे पर तथा किराया, खरीद, बीमा, परिशोजना वित्त-व्यवस्था वित्तीय सेवा तथा निगम पूंजी संरचना का प्रभाव, कानूनी विविक्षाएं, वित्तीय सेवा तथा बाजार संबंधी परिवेश; वित्तीय सेवाओं का विश्लेषण, विपणन अवसर।

भाग "ख"—वित्तीय मार्केट

वित्तीय मार्केट का वर्गीकरण; निधियों की घरेलू तथा अन्तराष्ट्रीय गति, भारतीय मुद्रा बाजार, उसकी विशेषता, संगठन, प्रचालन तथा नियमानुष्ठान, तथा निगम बाजार, भारत में स्टॉक एक्सचेंज तथा भारतीय प्रतिभूति विनिमय विकास; संस्थागत तथा यंत्रीय परिवर्तन।

भाग-III

प्रतिभूति मूल्यांकन और निवेश प्रबन्ध

उद्देश्य तथा कार्य क्षेत्र :—इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य सहभागियों को विभिन्न वित्तीय लिखतों की परिमाणात्मक एवं गुणात्मक तकनीकों के मूल्यांकन तथा वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निवेश संबंधी कार्यनीति में उनके एकीकरण से अच्छी तरह अवगत कराना।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग "क"—प्रतिभूति मूल्यांकन

वित्तीय पहलुओं का निवेश माध्यम के रूप में विशेषता प्रतिभूति मूल्यांकन की प्रकृति; निवेश विकल्प, अण, इक्विटी, मिश्र भविष्य, विकल्प आदि, ट्रेड-प्राँक वापसी का जोखिम : भारत में वित्तीय सूचना के स्रोत, वित्तीय मूल्यांकन का दृष्टिकोण, मूलभूत। ई आई सी विश्लेषण; तकनीकी विश्लेषण; कार्यकुशल पूंजी बाजार में प्रतिभूति मूल्यांकन; परिसम्पत्ति मूल्य सिद्धान्त; मार्केजिनल क्षेत्र—गेयरों का बेचना तथा उनकी कीमत, संगणना में उन्नति; प्रतिभूति विश्लेषक की संगूचना तथा कानून संबंधी परिवेश।

भाग "ख"—निवेश प्रबन्ध

स्वस्थ निवेश प्रबन्ध के सिद्धान्त, ट्रेड ऑफ रिटर्न में प्रबन्धकीय जोखिम; त्रिविधीकरण की संकल्पना, तथा निवेश प्रबन्ध में इसकी प्रायोज्यता; प्रतिभूति संविभाग, मार्केटिंग तथा शार्प का अंशदान; अनुभूति विकास विहंगम दृष्टि, निवेश परामर्श तथा ग्राहक सेवा; निवेशक संरक्षण।

पेपर-IV

पोर्टफोलियो मैनेजमेंट और पारस्परिक निधि

उद्देश्य और कार्य क्षेत्र :

इसका उद्देश्य सहभागियों को पोर्टफोलियो मैनेजमेंट और पारस्परिक निधि कवरेज के कृत्यों से अवगत कराना है।

व्योरेवार विषय सूची :

भाग क—पोर्टफोलियो मैनेजमेंट

परम्परागत सिद्धान्त, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट के उद्देश्य, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट के सिद्धान्त और व्यवहार, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक, दक्ष विपणन सिद्धान्त, पूंजीगत परिसम्पत्ति मूल्य आदर्श (सी पी ए एम), पोर्टफोलियो मैनेजमेंट का संस्थागत व्यवहार, स्टॉक बाजार मूल्य का व्यवहार, निवेश कार्य नीति, अंतरप्रगणन मूल्य सिद्धान्त, पोर्टफोलियो की विधिवत, भारत में कर लाभ योजना पर एक विहंगम दृष्टि।

भाग ख—पारस्परिक निधियां

पारस्परिक निधि का अर्थ, पोर्टफोलियो का वर्गीकरण, पारस्परिक निधियों के प्रकार, लाभ एवं हानियां, पारस्परिक

निधियों का चालू किया जाना, परिसम्पत्ति प्रबन्ध कम्पनी (ए.एम.सी.) के संगम जापन और अनुच्छेद का प्रावधान, पारस्परिक निधियों द्वारा निधियों का संचयन, पारस्परिक निधि कम्पनियों का प्रचालन निवेशक संरक्षण के लिए, त्याग विलेख तथा उपबंध, पारस्परिक निधि का अभिरक्षक, निवेश कार्यनीति के कार्य और प्रमुख विशेषताएँ, विपणन प्रक्रिया, कानूनी और लेखाकर्म पहले, ग्राहकों के अधिकार एवं शक्तियाँ निष्पादन मुद्रांकन, प्रतिवर्षी भारतीयों की पारस्परिक निधियाँ, पारस्परिक निधियों का विनियमन।

प्रश्न पत्र-V

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंध—

संरचना, पूँजी बाजार और साधन (इंस्ट्रुमेंट्स)

उद्देश्य और कार्यक्षेत्र : अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान, मुद्रा बाजार, विनिमय संयोजक एवं पूँजी बाजार जिसके अन्दर कार्य करते हैं कि संरचनात्मक रूपरेखा प्रदान करना।

व्योम्बार विषय सूची :

भाग क—अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबन्धकी सामान्य रूपरेखा—
संरचनात्मक रूपरेखा।

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंध, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंध के प्रमुख मुद्दे, विदेशी विनिमय बाजारों, विदेशी निवेशों का विश्लेषण, परिपोलनाएँ, विदेशी विनिमय वित्त व्यवस्था, वित्तीय और वीमिन निर्यातों, निर्यात बैंक व निर्यात उधार और प्रत्याभूति निर्यात की भूमिका—वस्तु-विनिमय व्यापार ; अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा का चुनाव, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान—विषय बैंक एवम् इसके संबद्ध संस्थान, प्राइवेट अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजार, अन्तर्राष्ट्रीय निवेश निर्णय, अन्तर्राष्ट्रीय साधन (इंस्ट्रुमेंट) एवं विशेषता ; यूरो बांड बाजार इंस्ट्रुमेंट ; विनिमय दर पद्धति और सिद्धान्त ; विनिमय जालिका—के चिह्न ; सीमापार वित्त ; नये विपणन इंस्ट्रुमेंट अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में धन एवं बैंकिंग यूरो बांडों की विभागा को प्रक्रिया ; यूरो बांड बाजार में निधियों के सोन अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक एवं कर आधारित विदेशी मुद्रा संयोजक पर विहंगम दृष्टि।

भाग-ख

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंध में अनुप्रयुक्त पहले, पूँजी बाजार का अन्तर्राष्ट्रीयकरण, अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी बाजार (संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय देशों, एशियाई और जापानी पूँजी बाजारों) को कार्य प्रणाली, विदेशी प्रतिभूतियों में निवेश ; अन्तर्राष्ट्रीय पोर्टफोलियो मैनेजमेंट ; अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी प्रवाह ; निश्चित तथा सामान्य आने वाले अवसर।

डा.एस.पी. नारंग, सचिव

पाद टिप्पणी : मुख्य विनियम अधिसूचना आई सी एस आई
सं. 710 : 2 (1) दिनांक 16 सितम्बर,

1982 में प्रकाशित हुए थे और बाद में निम्नलिखित अधिसूचनाओं द्वारा संशोधित हुए थे, देखिए :—

- (i) अधिसूचना सं. आई.सी.एस.आई./710/2 एम (1) दिनांक 30-3-1984
- (ii) अधिसूचना सं. आई.सी.एस.आई./710/2/एम (1) दिनांक 3-5-1984
- (iii) अधिसूचना सं. 710/2/एम(1) दिनांक 30-12-1985
- (iv) अधिसूचना सं. 710 / 2 / एम(1) दिनांक 9-9-1986
- (v) अधिसूचना सं. 710 / 2 / एम (1) दिनांक 23-2-1987
- (vi) अधिसूचना सं. 710 / 2 / एम (1) दिनांक 9-3-1987
- (vii) अधिसूचना सं. आई.सी.एस.आई./710/(2) (एम) 2 दिनांक 22-8-1988
- (viii) अधिसूचना सं. आई.सी.एस.आई./710(2) (एम)/2 दिनांक 23-8-1988
- (ix) अधिसूचना सं. 710/1/(एम)/1 ख दिनांक 20-8-1993 एवं 24-11-1993

THE INSTITUTE OF COMPANY SECRETARIES OF INDIA

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th September, 1994

No. 710/1(M)/17.—Whereas, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 39 of the Company Secretaries Act, 1980 (56 of 1980), the Council of the Institute of Company Secretaries of India with the prior approval of the Central Government, has formulated certain regulations specified below, for amending the Company Secretaries Regulations, 1982 :

Now, therefore, in pursuance of sub-section (3) of the said section, the Institute hereby publishes the said draft regulations for information of the persons likely to be affected thereby.

2. Notice is hereby given that any person desiring to forward any objection or suggestion with respect to the said draft regulations may forward the same within forty-five days of the date on which copies of the Gazette of India containing the said draft regulations are made available to the public, to the Secretary. The Institute of Company Secretaries of India, ICSI House, 22, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110003.

DRAFT REGULATIONS

1. (1) These regulations may be called the Company Secretaries (Amendment) Regulations, 1994.

(2) These regulations shall come into force on the date of their final publication in the Gazette of India.

2. In the Company Secretaries Regulations, 1982,—

- (a) after regulation 55A in Chapter VII, the following shall be inserted, namely :—

“CHAPTER VIIA

POST QUALIFYING COURSES AND EXAMINATIONS

55B. Post Qualifying Courses and Examinations—The Council may impart or arrange to impart practical and/or theoretical training and hold examinations in such subjects as it may consider useful for members and may award certificates of diplomas in connection therewith in accordance with the provisions of this Chapter.

POST MEMBERSHIP QUALIFICATION COURSE IN CAPITAL MARKETS AND FINANCIAL SERVICES

55C. Scheme of Capital Markets and Financial Services Courses—(1) The Capital Markets and Financial Services Course shall comprise of five papers and a dissertation or project report.

- (2) The syllabus for the Course shall be as specified in Schedule D.

55D. Administration—Notwithstanding anything contained in regulation 100, the Capital Markets and Financial Services Course shall be under the charge of a Committee constituted by the Council for the purpose under sub-section (2) of Section 17 of the Act (referred to in this Chapter as the “Committee”), whose functions shall include holding of the examination, admission thereto, granting approval of dissertation or project report, appointment and selection of examiners, prescription of books for the guidance of candidates, declaration of results and other allied matters.

55E. Advisory Board—The Committee may appoint an advisory board consisting of not more than seven persons to advise the Committee on the matters relating to the syllabus, examinations, dissertations or project report and any other matter relating to Capital Markets and Financial Services Course, as might be referred to it by the Committee.

55F. Admission to Capital Markets and Financial Services Course—(1) No candidate shall be admitted to the Capital Markets and Financial Services Course unless he,—

- (a) has been a member for a continuous period of two years or more on the date of his application for registration for the said course ; and
- (b) possesses practical experience to the satisfaction of the Council in any of the following manners, namely :—
 - (i) five years’ experience as a secretary or an executive in the secretarial administration, finance, accounts, personnel or legal departments in any company or body corporate including any public sector undertaking, autonomous body, statutory body, financial institution, or bank which in the opinion of the Council, provides scope for acquiring sufficient professional experience ;
 - (ii) five years’ experience as a lecturer in any university or college affiliated to any university, having taught at least one subject in the discipline of Accountancy, Finance, Law or Management ;
 - (iii) five years’ experience as a Gazetted Officer in the Central or State Government or in a supervisory post equivalent thereto in any autonomous or statutory body, in departments which generally deal with matters relating to working of corporate sector ;
 - (iv) five years’ experience of continuous practice on a whole time basis as a Company Secretary ;
 - (v) five years’ similar experience in any other equivalent position which, in the opinion of the Council, is equivalent to the experience specified in clauses (i) to (iv) above or any combination thereof.

(2) Any candidate applying for admission to the Capital Markets and Financial Services Course shall be required to apply in the appropriate form along with the registration fee, annual fee, if applicable and other fees as determined by the Council from time to time in respect of services to be rendered.

55G. Time limit for completing Capital Markets and Financial Services Course—(1) Every candidate applying for admission to the Capital Markets and Financial Services Course shall be registered in accordance with the regulations under this Chapter for a period of five years from the month in which his application, complete in all respects, is accepted by the Institute for registration.

(2) Time limit for completing examination—A candidate registered for the course under sub-regulation (1) shall be required to complete the examination and submit dissertation or project report, as the case may be, within the registration period.

(3) Termination of registration—The registration of a candidate shall terminate on the expiry of five years or at the end of the year in which the said candidate has successfully completed the Capital Markets and Financial Services Course, whichever is earlier :

Provided that the Committee may, subject to such guidelines as may be laid down in this behalf by the Council, extend the registration period of a candidate registered under this Chapter beyond five years.

55H. Admission to Capital Markets and Financial Services Examination—No member shall be admitted to in the Capital Markets and Financial Services examination unless,—

- (a) he is registered under regulation 55G at least six calendar months prior to the month in which the examination commences, that is to say, if any examination commences in December, candidates registered upto and including May of that calendar year shall be eligible ;
- (b) he applies for admission to an examination in the appropriate form, the copies of which may be made out by the candidate himself, with requisite particulars and fees as may be determined by the Council from time to time so as to reach the Institute in accordance with the directions given by the Committee.

55I. Examination requirements—(1) Candidates registered under this Chapter shall be required to comply with such conditions relating to examinations and dissertation or project report as may be laid down by the Council from time to time.

(2) Admission to examination, expulsion and withholding of results—(a) The Committee or a person authorised by it in this behalf may, for reasons to be recorded in writing,—

- (i) refuse to admit a candidate registered under regulation 55G to an examination; or
- (ii) admit him to an examination subject to such conditions as it or he may consider to be reasonable in the circumstances of a case ; or
- (iii) expel him from an examination hall, after he has been admitted to it in the usual course.

(b) Notwithstanding the fact that a candidate has obtained the minimum grade for passing an examination, the Committee may for reasons to be recorded in writing, withhold the result.

(c) Any order passed by the person authorised by the Committee may be reviewed by it and any order passed by the Committee may be reviewed by the Council.

55J. Suspension or cancellation of examination or dissertation project report results or registration—In the event of any misconduct by a candidate registered under this Chapter, the Council or the Committee may suo motu or on receipt of a complaint, if it is satisfied that, the misconduct is proved after such investigation as it may deem necessary and after

giving such candidate an opportunity to state his case suspend or debar the candidate from appearing in any one or more examinations or from submission of dissertation/project report, withhold or cancel his examination or dissertation/project report result or suspend or cancel his registration and debar him from future registration under this Chapter, as the case may be.

Explanation—Misconduct for the purposes of this regulation shall mean and include behaviour in a disorderly manner in relation to the Institute or in or near an examination premises, breach of any regulation, condition, guideline or direction laid down by the Institute, resorting to or attempting to resort to unfair means in connection with the writing of any examination conducted by the Institute, preparation or submission of dissertation or project report such as copying, reproduction of any material from existing literature or sources without duly acknowledging the same as may be specified by the Committee from time to time.

55K. Conduct of an Examination—(1) The examination may be conducted at such intervals, in such manner and at such time and places, as the Council may decide subject to availability of such minimum number of candidates enrolling for the examination as may be determined by the Committee from time to time.

(2) The dates and places of the examination and other particulars shall be published in the journal.

55L. Refund or appropriation of examination fees.—(1) A candidate once issued with an admission certificate for an examination shall not be entitled under any circumstances to refund of the examination fees paid by him.

(2) Where, however, a candidate applies to the Institute within fifteen days from the last date of examination for considering appropriation of examination fee to the next examination on the ground that he was prevented from attending the examination on account of circumstances beyond his control, and furnishes requisite documentary proof and information to the satisfaction of the Institute, the Institute may permit fifty per cent of the examination fees paid by him to be appropriated towards the fees payable for the next following examination for the same papers for which he was enrolled.

55M. Change of examination centre.—Applications for change of examination centres shall not ordinarily be entertained and if entertained a fee as may be determined by the Council from time to time be charged for the purpose:

Provided that no application received within fifteen days before the date of commencement of an examination shall be entertained by the Council.

55N. Dissertation/project report.—(1) A candidate after qualifying the written examination, shall submit not earlier than six months and not later than two years from the date of qualifying the examination a dissertation or a project report on a subject to be approved by the Committee within the registration period:

Provided that the Committee may extend time for submission of dissertation or project report in cases where a candidate—

- (i) fails to submit his dissertation or project report within two years from the date of qualifying the examination; or
- (ii) fails to submit his dissertation or project report during his registration period after he has obtained renewal of his registration under proviso to sub-regulation (3) of regulation 55G.

(2) The candidate shall submit the name of one or more guides from the panel of guides maintained by the Institute along with the synopsis of dissertation or research report giving therein details about the proposed dissertation or research report which shall include the problems identified, their relevance to the Capital Markets and Financial Services, the date and methodology to be used and suggestions or recommendations in relation to the problems so identified:

2158 GI/94-2

Provided that a candidate may opt, with the prior approval of the Committee, for a guide not included in the panel of guides maintained by the Institute.

(3) The dissertation or project report shall be submitted along with such non refundable fees as may be determined by the Council from time to time.

(4) The candidate shall submit in English five neatly type written or printed copies of the dissertation or project report embodying the results of his research:

Provided that it shall be competent for the Council to permit subject to such conditions as it may deem fit and after giving sufficient advance information to the candidates the use of Hindi as a medium of writing the dissertation or project report.

(5) The candidate shall further submit a statement indicating the sources from which his information has been derived and the extent to which he has based his work on the work of others and shall indicate which portion or portions of his work he claims as original.

(6) The Committee shall forward the dissertation or project report to the referees appointed by it for their advice whether the dissertation or project report is of a sufficiently high degree of merit as to deserve approval or whether it may be modified and if so, in what manner or whether it may be rejected.

(7) If a candidate fails to submit the dissertation or project report within the period as specified in sub-regulation (1) or such extended period as the Committee may grant under proviso to sub-regulation (1), his registration under this Chapter shall stand cancelled:

Provided that the Committee may renew the registration at its discretion on the receipt of an application from the candidate together with fee which may be determined by the Council which shall not be refunded except where the application is not entertained and on such renewal of the registration the candidate shall be entitled to claim exemption from the papers previously passed by him without payment of any exemption fee.

55O. Interview—The candidate shall be required to appear for interview on the dissertation or project report before an interview board that may be appointed by the Committee in this behalf.

55P. Requirements for passing the course.—(1) There shall be the system of 7-point scale of grading [O (out-standing), A, B, C, D, E, F, (very poor)] for evaluation of the candidates in the examination and dissertation or project report. The minimum grade required for passing in a paper shall be a 'C' grade point in each paper and 'B' grade point average for all the papers. The grade point average shall be calculated on the following basis:

O 6, A-5, B-4, C-3, D-2, E-1, F-0 (Zero):

Provided that where a grade point average results in a decimal point that fraction equivalent to 5 or above may be treated as 1.

(2) **Individual intimation—**Every candidate shall be individually informed of the grades obtained in each paper of the course and the result thereof but under no circumstances the marks obtained in individual questions or sections of a paper shall be furnished.

(3) **Verification of grades.—**Information as to whether a candidate's answer to each question in any particular paper or papers at any examination have been duly examined and marked or not shall be supplied to a candidate on his submitting an application with such verification fee as may be determined by the Council from time to time within thirty days of the declaration of the results of the said examination.

Explanation.—Fee referred to in this sub-regulation is only for verifying whether the candidate's answers in any particular paper or papers have been examined and evaluated and not for revaluation of the answers.

55Q. Examiners.—The Committee may make such arrangements and may appoint such examiners to set question papers and value answer books as it may deem fit.

55R. Amendment of result.—In any case where it is found that the result of an examination has been affected by an error, malpractice, fraud, improper conduct or other matter of whatever nature, the Committee shall have the power to amend such result in such manner as shall be in accord with the true position and to make such declaration as the Committee shall consider necessary in that behalf.

55S. Grant of Diploma Certificate.—A candidate successfully completing the Capital Markets and Financial Services Course under this Chapter shall be awarded a Diploma Certificate to that effect in the appropriate form by the Institute and shall be entitled to use the descriptive letters and brackets "PMDCS (CMFS)" to indicate that he has been awarded in the "post membership diploma in Capital Markets and Financial Services."

(b) After Schedule 'CCA', the following Schedule shall be inserted, namely :—

"SCHEDULE 'D'"

[Regulation 55C(2)]

SYLLABUS FOR POST MEMBERSHIP DIPLOMA IN CAPITAL MARKETS AND FINANCIAL SERVICES EXAMINATION

(Each paper will be of three hours duration and will carry 100 marks. The medium of writing the examination will be English :

Provided that it shall be competent for the Council to permit, subject to such conditions as it may deem fit and after giving sufficient advance information to the candidates, the use of Hindi as a medium of writing for any particular paper.)

PAPER I

Financial Management—Concepts, Issues and Practices
Objective and Scope.—To apprise the candidates of the various dimensions of Corporate Financial Management.

Detailed Contents :

1. An overview of financial management :

Environment of financial management—dynamic and operating, tasks of financial management, goals of financial management; responsibilities for financial managers.

2. Financial forecasting and planning :

Funds flow forecast; cash forecast; projected profit and loss account and balance sheet.

3. Capital structuring and raising of funds :

Raising funds for projects, modernisation and expansion, revamping and rehabilitation, additional capital expenditure; funds for working capital; structure and cost of capital; drafting of prospectus; compliance of regulations regarding issue of securities; price justification, issue of share capital—equity, preference, rights and bonus; issue of debentures; Securities and Exchange Board of India guidelines; financial intermediaries, underwriting rating, promoters' contribution, creation of trust; creation of debenture redemption fund etc.

4. Working capital management.—Working capital finance from commercial banks; recommendations of various committees; Reserve Bank of India's general guidelines; lead bank and banks in consortium; credit appraisal; permissible bank finance; hypothecation; agreement; drawing power; periodic reporting; periodicity—nature of reports—inspection by banks.

5. International finance management.—Overview—international tax management—measurement and management of political risk—foreign investment decisions, cost of capital

for foreign investments and financial structure, compliance of Foreign Exchange Regulation Act, 1973 and Rules made thereunder.

6. Financial management of merger, amalgamations, takeover and acquisitions :

Purport of Securities and Exchange Board of India's guidelines.

7. Financing—internal and external—Credit policies and collection systems—dividend decision—policies and factors affecting dividend policy, tax and depreciation considerations—bonus shares and stock splits.

8. Project implementation and monitoring.—Approval of project by financial institutions—licensing and reservations under new industrial policy, norms of all India financial institutions, other statutory clearances including environmental clearance, steps prior to and post sanction by financial institutions—signing of loan agreements, compliance reports during implementation, revision of project estimates and supplementary loan, if any tax concessions available including concessions for 100% export oriented units.

9. Rehabilitation of sick industries.—Obligations under the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985—definition of sick company—role of Board for Industrial and Financial Reconstruction (BIFR)—role of operating agencies—nature of recommendations by operating agencies, representation by interested parties—concessions for rehabilitation, management of industrial sickness—signals of sickness, special provisions for Non-Resident Indian (NRI) investment in sick industries, benefits of Income-tax for amalgamation of sick industries etc.

PAPER II

FINANCIAL SERVICES AND FINANCIAL MARKETS

Objective and Scope.—To familiarise the participants with the concepts, issues and practices that govern the effective design and provisions of financial services in the target markets.

Detailed Contents :

Part A—Financial Services

- Nature and scope of financial services; institutions providing financial services; type of financial services; challenges ahead.
- New financing services; venture capital, origin, characteristics, administration of venture capital funds, experience of venture capital in United States of America, United Kingdom, Japan, European Nations, spread of risk, venture capital syndication, tax and legal aspects.
- Credit rating services.
- Consumer finance, credit cards, strategies involved in financing.
- Real estate financing, leasing and hire purchase; insurance; project finance—debt financing; impact of financial services and corporate capital structure, legal implications; financial services and market environment; analysis of financial services, marketing opportunities.

Part B—Financial Markets

- Taxonomy of financial markets; domestic and international flow of funds, Indian money market, its characteristics, organisation, operations and the regulatory mechanism; the new issue market, stock exchanges in India and the evolution of Over the Counter Exchange of India (OTCEI); institutional and instrumental innovations.

PAPER III

SECURITY EVALUATION AND INVESTMENT MANAGEMENT

Objective and Scope—The objective of this course is to equip the participants with the techniques of quantitative and qualitative assessment of various financial instruments and their integration into investment strategies for meeting the desired objectives.

Detailed Contents :

Part A—Security Evaluation

Characterisation of financial aspects as an investment medium; nature of security evaluation; investment alternatives, debt, equity, hybrids, future, options etc.; risk return trade-offs; sources of financial information in India; approaches to security evaluation, fundamental/ EIC analysis; technical analysis security evaluation in efficient capital market asset pricing theories; public sector—disinvestment of shares and pricing of the same; advancements in computation; communication and legal environment of security analysis.

Part B—Investment Management

Principles of sound investment management, managing risk return trade offs; the concept of diversification and its applicability in investment management; security portfolios, contributions of Markowitz and Sharpe, subsequent developments (an overview), investment counselling and client servicing; investor protection.

PAPER IV

PORTFOLIO MANAGEMENT AND MUTUAL FUNDS

Objective and Scope—The objective is to familiarise the participants with functioning of portfolio management and mutual funds coverage.

Detailed Contents :

Part A—Portfolio Management

An overview of traditional theory, objectives of portfolio management, principles and practice of portfolio management, techniques involved in portfolio management, efficient market theory, modern theory, capital assets pricing model (CAPM), institutions practices of portfolio management, behaviour of stock market prices, investment strategy, arbitrage pricing theory, diversification of portfolio, tax benefits schemes in India.

Part B—Mutual Funds

Meaning of mutual fund, portfolio classification, types of mutual funds, advantages and disadvantages, floatation of mutual funds, drafting the memorandum and articles of association of asset management company (AMC), collection of funds by mutual funds, operation of mutual fund companies, trust deeds and provisions for investors' protection, custodians of mutual fund, functions and salient features, investment strategies, marketing procedure, legal and

accounting aspects, rights and powers of trustees, performance appraisal, mutual funds of Non Resident Indians, regulation of mutual funds.

PAPER V

INTERNATIONAL FINANCIAL MANAGEMENT—CONCEPTS, CAPITAL MARKETS AND INSTRUMENTS

Objective and Scope—To provide a conceptual framework within which the working of international financial institutions, money markets, exchange transactions and capital markets operate.

Detailed Contents :

Part A—General outline in International

Financial Management—Conceptual framework

An overview of international financial management, major issues in international financial management, foreign exchange markets, analysis of overseas investment, projects, foreign exchange financing, financing and insuring exports, role of Export Import Bank and Export Credit and Guarantee Corporation—barter deals, choice of international currency, international financial institutions—world bank and affiliates, private international financial markets, international investment decisions, international instruments and characteristics, Eurobond market instruments, exchange rate system and theories, exchange risks—insuring against risk, cross border finance, new marketing instruments, money and banking in international markets, procedure of marketing Eurobonds, sources of funds in Eurobond market, accounting and tax treatment of international transactions, foreign currency translation.

Part B

Applied aspects in Institutional Financial Management

Globalisation of capital markets, working of international capital markets (United States of America, United Kingdom, European countries, Asian and Japanese capital markets) investments in foreign securities, international portfolio management; international capital flow, existing and emerging opportunities."

DR. S. P. NARANG, Secy.

Note—Principal regulations were published vide notification ICSI No. 710 2(1) dated 16th September, 1982 and subsequently amended vide—

- (i) Notification No. ICSI/710/2/M(1) dated 30-3-1984.
- (ii) Notification No. ICSI/710/2/M(1) dated 3-5-1984.
- (iii) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 30-12-1985.
- (iv) Notification No. 710 : 2 : M(1) dated 9-9-1986.
- (v) Notification No. 710:2:M(1) dated 23-2-1987.
- (vi) Notification No. 710:2:M(1) dated 9-3-1987.
- (vii) Notification No. ICSI/710(2) (M) (2) dated 22-8-1988.
- (viii) Notification No. ICSI/710(2) (M)/2 dated 23-8-1988.
- (ix) Notification No. 710/1/(M)/18 dated 20-8-1993 and 24-11-1993.

